International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 130-131

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 130-131
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-03-2017
Accepted: 19-04-2017

डॉ0 तरुण कुमार शर्मा
प्रवक्ता, संस्कृत–विभाग,
अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा
(बाँदा) उ0प्र0

Correspondence
डॉ0 तरुण कुमार शर्मा
प्रवक्ता, संस्कृत–विभाग,
अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा
(बाँदा) उ0प्र0

कविकण्ठाभरणम् में प्रतिपादित कविशिक्षा : एक अनुशीलन

डॉ0 तरुण कुमार शर्मा

प्रस्तावना

बहुआयामी कर्तृव्य एवं व्यक्तित्व के धनी आचार्य क्षेमेन्द्र ऐसे महाकवि हैं, जिन्होंने कवि–शिक्षा के क्षेत्र में स्वतन्त्र ग्रन्थ 'कविकण्ठाभरणम्' की रचना की। कवित्त्व एवं आचार्यत्व के अद्भुत समन्वय क्षेमेन्द्र ने लघु एवं बृहद् कलेवर के विविध विषयों एवं विधाओं पर बीसों काव्य लिखे साथ ही काव्यशास्त्र छन्दःशास्त्र के अतिरिक्त कविशिक्षापरक 'कविकण्ठाभरण' सुव्यवस्थित ग्रन्थ का निर्माण किया और इस लघुकाव्य ग्रन्थ में अपनी मौलिक उद्भावनाएँ एवं व्यावहारिक समीक्षाएं देकर अपने आचार्यत्त्व की प्रतिष्ठापना की। अन्य आचार्यों की तरह आचार्य क्षेमेन्द्र के समक्ष भी यह सामान्य प्रश्न रखा जा सकता है कि कवित्त्व तो सहज एवं जन्मजात होता है। तो फिर कवि की शिक्षा कैसी? क्या कवि को प्रशिक्षित करना सम्भव और स्वीकार्य है? क्षेमेन्द्र भी इसका सामान्य उत्तर देते हुए कहते हैं –

'शिष्याणामुपदेशाय विशेषाय विपश्चिताम्' अर्थात् शिक्षणीय नौसिख कवियों को काव्य की शिक्षा देने के लिए और प्रबुद्ध कवियों के कवित्त्व में विशेष निखार लाने के लिए यह सरस्वती का सार प्रस्तुत किया गया है।[1] शिक्षा के क्रमिक विकास की इसी दृष्टि से आचार्य क्षेमेन्द्र ने 'कविकण्ठाभरण' को क्रमशः पाँच सन्धियों में वर्गीकृत किया है – (1) अकवि को कवित्त्व प्राप्ति (2) वाणी पर अधिकार–प्राप्त कवि की शिक्षा (3) शिक्षा प्राप्त होने पर चमत्कृति (4) गुण–दोषों की उद्गति और (5) शास्त्रों से परिचय प्राप्ति। अकवि की कवित्त्वशक्ति के उपायों की चर्चा कर आचार्य क्षेमेन्द्र ने रुद्रट आदि पूर्ववर्ती आचार्यों की भाँति सहजा के अतिरिक्त शक्ति के उत्पाद्या रूप को स्वीकार किया है।

आचार्य क्षेमेन्द्र का साहित्य न केवल भारतीय लोक जीवन की अनुपम निधि है, अपितु विश्व वाङ्मय में उनका विशिष्ट स्थान है उन्होंने मूलतः 40 काव्यों का सृजन किया है जिनमें 18 प्रकाशित है। साहित्यकारों एवं काव्य–तत्त्वज्ञ आचार्यों के मध्य काव्य, साहित्य, नीति, कथालोक, सिद्धान्त एवं कवि शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान प्रदर्शित करने वाले आचार्य क्षेमेन्द्र जिनके सन्दर्भ में डॉ0 आर्येन्द्र शर्मा ने उचित ही कहा है–

'Kshemendra was a polymath and a prolific writer. Besides a number of descriptive, narrative and satairic poems. He also wrote several works on poetic, metric, poetic discipline and Erotic'.

आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ कविकण्ठाभरण में काव्य की सृष्टि किस प्रकार होती है इस पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है–

रसे तन्मयतां गतस्य गुणे गुणे हर्षवशीकृतस्य।
विवेकसेक स्वकपाकभिन्नं मनः प्रसूतेऽङ्कुरवत् कवित्त्वम्।।[2]

अर्थात् विविध रसों के आस्वाद में तन्मय हो जाने वाला और भिन्न भिन्न हर्षद गुणों से आकृष्ट कवि का मन विवेक के सेचन से परिपक्व होकर उछलता है और भीतर पके हुए अंकुर के समान कवित्त्व को जन्म देता है आशय यह है कि काव्य का निर्माण उस विषय के चिन्तन, मनन, कल्पना आदि की लम्बी आन्तरिक प्रक्रिया के बाद होता है।

शिष्योपदेश के प्रसग में भी क्षेमेन्द्र ने कहा है–

गीतेषु गाथास्वथ देशभाषा काव्येषु दद्यात् सरसेषु कर्णम्।
वाचां चमत्कार विधायिनीनां नवार्थचर्चासु रुचिं विदध्यात्।।[3]

उपर्युक्त उपदेश से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस काल में गीत, लोकगीत काव्यों के चमत्कार एवं नये नये अर्थों पर गोष्ठियों में चर्चा होती थी। यहाँ वाणी के प्रसंग में 'चमत्कार' शब्द का प्रयोग कर आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपनी मौलिक उद्भावना का परिचय दिया है। उन्होंने तृतीय सन्धि का नाम ही चमत्कृति रखा है। आचार्य क्षेमेन्द्र दृढ़ स्थापना करते हुए कहा है कि चमत्कार के बिना कवि को कवित्व की प्राप्ति नहीं हो सकती और चमत्कार से हीन काव्य नहीं हो सकता वे स्पष्ट रूप से कहते हैं –

एकेन केनचिदनर्धमणिप्रभेण,
काव्यं चमत्कृतिपदेन विना सुवर्णम्।
निर्दोषलेशमपि रोहति कस्यचित्ते
लावण्यहीनामेव यौवनमगनानाम्।।[4]

यदि कोई भी रचना चाहे कितने ही सुन्दर वर्णों में निबद्ध हो, चाहे वह कितनी ही निर्दोष क्यों न हो अगर वह चमत्कारहीन है तो उसमें उसी प्रकार आकर्षण नहीं होगा, जिस प्रकार लावण्य से हीन होने पर अगनाओं का यौवन किसी के मन को आकर्षित नहीं कर पाता। क्षेमेन्द्र ने चमत्कार को काव्य के मूलतत्त्व के रूप में ग्रहण किया यहाँ तक कि अपने प्रतिपाद्य औचित्य सिद्धान्त के विवेचन में उन्होंने औचित्य को उस चमत्कार का कारक तत्त्व बतलाया।

औचित्यस्य चमत्कारकारिणश्चारुचर्मणे।[5]

आचार्य होने के नाते क्षेमेन्द्र ने काव्यगत चमत्कार और चमत्कारभाव दोनों विपरीत स्थितियों को सामने रख दिया है तथा अधिकांश उदाहरण अपने ही ग्रन्थों से दिये हैं। चमत्कार का ऐसा सूक्ष्म और व्यापक विवेचन सर्वप्रथम आचार्य क्षेमेन्द्र ने ही किया है और यह साहित्यशास्त्र को उनका विशिष्ट योगदान है। यद्यपि क्षेमेन्द्र के पूर्ववर्ती कश्मीरी आचार्यों में से अनेक ने चमत्कार के समानान्तर तत्त्व की अन्यान्य शब्दों द्वारा व्याख्या अवश्य ही की थी कश्मीर के आदि आचार्य भामह ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालटार' में अलटार 'चारुता', 'सौन्दर्य', 'शोभा' आदि शब्दों के द्वारा, वामन ने 'सौन्दर्य' शब्द द्वारा, रुद्रट ने 'वैचित्र्य' शब्द द्वारा इसी तत्त्व का व्याख्यान किया है अन्य कश्मीरी आचार्यों में कुन्तक ने लोकोत्तर चमत्कार 'अन्तश्चमत्कार' आदि पदावली द्वारा इसी चमत्कार तत्त्व का निरुपण किया है। आचार्य आनन्दवर्धन ने 'स्फुरणेयं काचिदिति सहृदयानां चमत्कृतिरुत्पद्यते।'[6] ध्वन्यालोक के चतुर्थ उद्योत में लिखकर इसे सहृदयों का स्फुरण अर्थात् आस्वादमय अनुभूति बताया है। अभिनव गुप्त ने चमत्कार के लिए 'संवित्त,' 'रसना', 'विश्रान्ति', 'आस्वाद' आदि शब्दों का प्रयोग किया है और इसे आनन्द का अपर पर्याय बतलाया है। इस प्रकार जिस 'चमत्कार' शब्द को अन्य आचार्यों ने दिङ्मात्र स्वल्पविवेचन हेतु ग्रहण किया था।

क्षेमेन्द्र के इस चमत्कार निरूपण ने निश्चित रूप से परवर्ती आचार्यों के मतों को प्रभावित किया। चौदहवीं शताब्दी में जन्मे आचार्य विश्वेश्वर कविचन्द्र ने अपनी 'चमत्कारचन्द्रिका' में चमत्कार युक्त शब्द–अर्थ को काव्य की संज्ञा दी – 'वागर्थौ सचमत्कारौ काव्यं काव्यविदो विदुः।'[7] और चमत्कार को विद्वानों के लिए आनन्दातिशय का करण बताया। उन्होंने गुण, रीति, रस, वृत्ति, पाक, शैया और अलटति सात चमत्कार–कारणों की चर्चा की। साथ ही काव्य के अधम, मध्यम, उत्तम भेदों के समानान्तर काव्य के चमत्कारि, चमत्कारितर और चमत्कारितम तीन भेद किये। अठारहवीं शताब्दी के आचार्य हरिप्रसाद ने तो अपने ग्रन्थ 'काव्यालोक' में चमत्कार को काव्य की आत्मा ही कह दिया है – 'विशिष्टशब्दरूपस्य काव्यस्यात्मा चमत्कृतिः।' इस प्रकार आचार्य क्षेमेन्द्र ने चमत्कार को कवित्त्व का अपरिहार्यतत्त्व बताया उसको परवर्ती आचार्यों ने भी काव्य निकष के रूप में ग्रहण कर उनकी स्थापना को आगे बढ़ाया।

कविकण्ठाभरण में आगे 'गुणदोषविभाग' नामक चतुर्थ सन्धि एवं 'परिचय प्राप्ति' नामक पंचम सन्धि में भी क्षेमेन्द्र ने कवि शिक्षा–सम्बन्धी मान्यताओं को सैकड़ों उदाहरणों से परिपुष्ट कर प्रस्तुत किया है। वे गुण एवं दोषों के विपरीत युग्म बनाते हैं; जैसे शब्द वैमल्य, अर्थवैमल्य एवं रसवैमल्य तीन काव्यगुण है तो शब्दकालुष्य, अर्थकालुष्य एवं रसकालुष्य तीन काव्य दोष। वे सगुण एवं निर्गुण, सदोष एवं निर्दोष काव्यों के उदाहरण अपने तथा अन्य कवियों के काव्यों से देते हैं और इस क्रम में वे अपने काव्यों तथा अन्य कवियों का नामोल्लेख करते हैं। इस दृष्टि से क्षेमेन्द्र अपनी कविताओं को बार–बार शास्त्रनिकष पर परीक्षण हेतु प्रस्तुत करते हैं। दूसरी ओर वह इन उदाहरणों द्वारा काश्मीर की कवि परम्परा से भी परिचित कराते चलते हैं इस ग्रन्थ में इन्द्रभानु, उदय सिंह, चक्रपाल, चन्द्रक, दामोदर गुप्त, भल्लट, मुक्ताकण, मुक्तिकलश, लक्ष्मणादित्य, शिवस्वामी आदि प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध संस्कृत कवियों के उद्धरण प्राप्त होते हैं। इस कारण काव्यक्षेत्र में उनका योगदान और भी बढ़ जाता है। इस प्रकार क्षेमेन्द्र आचार्य धर्म के साथ साथ अपने कवि धर्म का भी निर्वाह करते चलते हैं।

यद्यपि आचार्य क्षेमेन्द्र के पूर्व भी राजशेखर की 'काव्यमीमांसा' में कविशिक्षा– सम्प्रदाय की प्रतिष्ठापना हो चुकी थी, और उनके परवर्ती काल में भी अमर सिंह, अमरचन्द, देवेश्वर जैसे आचार्यों ने स्वतन्त्र और सर्वांगीण ग्रन्थ लिखकर कवि–शिक्षा को समृद्ध किया, परन्तु कश्मीरी साहित्यशास्त्रियों के मध्य तो क्षेमेन्द्र ही एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने कवि–शिक्षा पर एवं सारगर्भित एवं स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखा, जिसमें अनावश्यक विस्तार एवं दीर्घकल्पना नहीं है, जिसमें कवि के राजसी जीवन की कृत्रिमता एवं विलासिता पर बल नही है तथा जिसमें बाह्यपक्ष के स्थान पर कवि के आन्तरिक पक्ष की समीक्षा अधिक है कवियों का कण्ठाहार बने 'कविकण्ठाभरण' की रचना कर आचार्य क्षेमेन्द्र ने कश्मीरी संस्कृत काव्यशास्त्र में कवि–शिक्षा सम्प्रदाय के अद्वितीय आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए। संक्षेपतः कहा जा सकता है आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ कविकण्ठाभरण में जिन कवि–शिक्षा सम्बन्धी तथ्यों का समुद्घाटन किया है, वह परवर्ती कवित्व जिज्ञासुओं के लिए कवित्व प्राप्ति का सुगम उपाय है। कविकण्ठाभरण में दिये गये कवित्त्व प्राप्ति के उपायों द्वारा वर्तमान में भी कवित्त्व प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. कविकण्ठाभरण 1/2
2. कविकण्ठाभरण 1/18
3. कविकण्ठाभरण 1/17
4. कविकण्ठाभरण 3/2
5. औचित्यविचारचर्चा, का0 3
6. ध्वन्यालोक 4/17 वृत्तिभाग
7. चमत्कार चन्द्रिका, विलास 1 पृ0 3